लड़े हैं जीते हैं , लड़ेंगे जीतेंगे

डॉक्टर रणबीर सिंह

म्हारी कुर्बानी क्यावण दिन की आज पूरा रंग ल्याई रै।।
मेडिकल छातर आंदोलन की दी हरियाणे मैं गूंज सुनाई रै।।

1

विद्यार्थी आंदोलन कारण सरकार नै धरती भिड़ी होगी
पांचों कालेज कट्ठे होकै लड़े जनता भी तार सही पिरोगी
हरियाणा सरकार आपा खोगी विद्यार्थियों नै धूल चटाई रै।।

2

पीजीआईएमएस नै हुंकार भरी गैल दूजे कालेज भी आये फेर
आरडीए भी गेल्याँ आगी जन संगठन भी ना पाछै पाये फेर
एकता के हाथ बढ़ाये फेर या सरकार भी घनी घबराई रै।।

3

विद्यार्थी एकता तोडण नै घणे हथकंडे अपनाये थे
मेडिकल छात्र समझे चाल इनकी ना बहका मैं आये थे
हर कदम पै हौंसले दिखाए थे एकता कसूत बढ़ाई रै।।

4

एक लड़ाई लड़े सैं जीते सैं हम आगै भी लड़ेंगे जीतेंगे
हड़ताल के ये दिन याद रहैंगे आड़े का समों नहीं भूलेंगे
*ईब जमकै पढ़ाई करेंगे रणबीर करी तुरत कविताई रै।।

व्यंग्य

मान लीजिए, अगर पता चले कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम स्वयं महीयसी सीता माता के साथ अकस्मात काशी पधारे और सीधे कलेक्ट्रेट जाकर महामना मोदी जी के खिलाफ पर्चा भर आये, तो क्या सोचते हैं, फेसबुकिया भक्तों की दीवारें कैसे फटेंगी!!

भक्त1- जय श्री राम की ऐसी तैसी, बताइये हम इनका भव्य मंदिर बनवाने में लगे हैं और इनको चुनाव लड़ने की पड़ी है। अरे देशभक्त होते तो टाट में पड़े रहते, लेकिन इनको तो अब संसद की एसी चाहिए। चुनाव लड़ने वाली कौमें क्रांति नही करती। तब क्यो नही लड़े, जब बाप ने देशनिकाला दे दिया था? कौन बाप निकालता है अपने लड़के को ऐसे भरी जवानी में? नाकारा रहे होंगे तभी तो।

भक्त2-पूरे रविवंश में ऐसा कपूत नही हुआ कोई। प्राण जाय पर वचन न जाई वाली परम्परा का तेल निकाल कर रख दिया। माँ बाप ने इनको अकेले वनवास दिया था तो बीवी को भी साथ ले गए। वनवास था कि वनविहार? याद रखियेगा, भाई को भी भाई नही, नौकर बनाकर ले गए थे।

भक्त3- अरे बीवी छोड़नी ही थी तो मोदी जी की तरह छोड़ते, बेचारे धोबी के कंधे पर रखकर बन्दूक चला दी। नाहक बदनाम किया बेचारे गरीब को। यही है, यही है सामंती मानसिकता, साफ पता चलता है कि दलित और पिछड़ा विरोधी आदमी थे। जिस बीवी को छोड़ने के लिए बेचारे धोबी को बदनाम कर दिया, उसी बीवी के लिए ब्राह्मण रावण को मारा बताइये। ये जाति द्रोही आदमी है, इनका तो पर्चा खारिज कर देना चाहिए।

भक्त4- रोज 30 बाण मारते थे। दस सिर और बीस भुजाएं काटते थे। वो सब फिर से उग आता था। देश का धन बरबाद करते रहे, वो तो मोदी जी ने कान में असली राज बताया कि इसकी नाभि में अमृत है। तब जा के 31वाँ बाण नाभि में मारा। तब जा के अमृत सूखा था, लेकिन बिकाऊ मीडिया ये सब नही बताएगा आपको।

भक्त5- मियां बीवी ने मिलकर बेचारे लक्ष्मण को तो मरवा ही डाला था। सोने के मृग वाला इतिहास वामी इतिहासकारों का लिखा इतिहास है। असली इतिहास पढ़िए तो पता चलेगा, मारीच से मिल के लक्ष्मण को मारने का पूरा प्लान था। लक्ष्मण तो समझ भी गए थे पर त्रिया चरित्र भी तो कोई चीज़ होती है।

बीजेपी आईटी सेल- बेकार का, बाप के पैसे पर राज करने का सपना देखने वाला जानकर जब बाप ने देशनिकाला दिया तो हजरत राजसिंहासन का रत्नजड़ित खड़ाऊं चुरा ले गए।भागते भूत की लँगोटी भली। वो तो भरत की पारखी नज़र ने ताड़ लिया और पूरे लाव लश्कर के साथ वो कीमती और ऐतिहासिक खड़ाऊं ले आने वन आये। आप असली इतिहास पढ़ के देखिए, भरत इनको मनाने नही आये थे। वही रत्नजड़ित खड़ाऊं लेने आये थे और पूरे समय वही मांगते रहे, अंत मे लेकर ही माने।

ये है इतिहास इन तथाकथित सूर्यवंशियों का। चुपचाप वही टाट में पड़े रहते तो भव्य क्या, मोदी जी दिव्य मंदिर बनवा देते। लेकिन ये तो देशद्रोही निकले। अब रहिये वहीं।

कार्टूनिस्ट हेमंत मालवीय पर रामदेव का कहर

अंतत: मेरा प्रारब्ध मुझे वहां तक ले ही आया जहां आने के लिए इस देश की मिट्टी और सियासी हालात ने मुझे कार्टूनिस्ट के रूप में जन्म दिया .. सोशल मीडिया की खबरों के अनुसार एक कार्टून बनाने के कारण योग व्यवसायी बाबा रामदेव की व्यवसायी संस्था पतंजलि ने मेरे और एक अन्य कार्टूनिस्ट के खिलाफ धारा 153A जो एक गैर जमानती धारा है उत्तराखंड के हरिद्वार के कनखल थाने में मुकदमा दर्ज कराया है ! और मेरी तलाश जारी हो चुकी है ...

मैं भागूंगा नही ...भाग कर जाऊंगा भी तो कहा ? और बाबा की तरह तो कतई नही भाग सकता ! शुगर हाइपरटेंशन ब्लड प्रेशर का शिकार हार्ट अटैक झेल चुका दिल का मरीज हु ....मेरा एक परिवार है... !

ना मैं बाबा रामदेव जैसा ताकतवर अमीर व्यवसायी आदमी ठहरा जिसने इतने वकील रख रखे हो कि अलग से पतञ्जलि लीगल सेल ही खोल रखी है लोगो पे मुकदमे लगाने के लिए, मैं तो अदना सा गरीब कार्टूनिस्ट हूं, जो पैसे रसूख और सत्ता की ताकत के आगे 130 अरब जनता में तो मामूली सी चींटी जितनी हैसियत भी नही रखता, एक आम आदमी के नाते कार्पोरेट राजनीति मिडिया की नाटक बाजी झेल नही पाता तो अपनी फ्रस्ट्रेशन को अपनी वाल पे अपने दायरे में कभी कार्टुन कभी व्यग्य कटाक्ष कर अपने मानसिक तनाव को निकाल लिया करता है ...! मुझे कतई अंदाज नही था ऐसा करना अपराध है ..! मुझे देश की महान कानून व्यवस्था पे पूरा भरोसा है, ... पर मेरे पास इतना पैसा नही है कि पतंजलि के वकीलों की फौज से एक अदद वकील खड़ा कर लड़ भी पाऊ ...सो जब चाहो तब समर्पण कर दूंगा..

बचपन से मे मैं गांधी जी और भगत सिंह के बारे में पढा करता था. ... सोचता था आज अगर भगत सिंह जिंदा होते तो वे

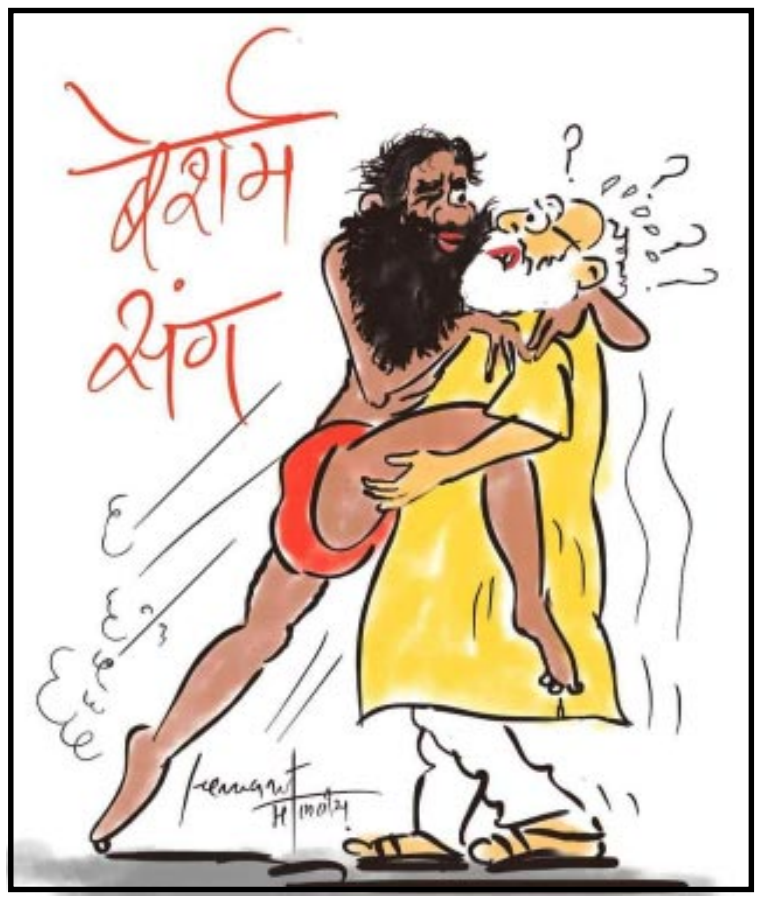

आजकल के हालात पे किस तरह रिएक्ट करते... ? और यदि वे कर पाते तो क्या आज हमारे आज के समाज हालत में उन्हें भगत सिंह ही समझा जाता? .....

70 के दशक में मेरे पिता भी ऐसे ही कार्टूनिस्ट थे ... कार्टूनों में उनके सवाल भी ऐसे ही तीखे होते थे ! ऐसे ही करारे कटाक्ष करते थे , छोटे से अखबार में छपते थे आपात काल भी था ... मगर वो समय भी ऐसा नही था, ...कि उन पर किसी ने कभी मुकदमा ही कर दिया हो, ... खैर मैं कोशिश करूंगा जमानत के वक्त गांधीजी का अनुसरण कर सकू ! हे ईश्वर मुझे इतनी ताकत दे... हे भारत देश की जनता मुझे सम्बल हौसला दे ..अदालत मुझे न्याय दे !

मनु और महिलाएँ

प्रभात कुमार बसन्त

अभी पाँच -छ: दिन पहले एक मंदिर के पास से गुजर रहा था। मानवधर्मशास्त्र के ऊपर भाषण हो रहा था । वक्ता बोले कि मनुस्मृति को न मानना अपने पिता को न मानने के जैसा है । उनका मानना था कि मनुस्मृति में आदर्श परिवार, आदर्श नारी और आदर्श समाज तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं । अगर हम उन्हें मान लें तो हमारे देश की सारी समस्यायों का समाधान हो जाएगा ।

चूंकि बड़ी संख्या में लोग यह मानते हैं कि इस किताब में समाज की समस्यायों का निदान है इसलिए हमें इनके बारे में जानना चाहिए। मानवधर्मशास्त्र में जाति व्यवस्था, परिवार के ढाँचे और स्त्रियों की स्थिति को लेकर काफी चर्चा की गयी है । इनकी समझ बनाना इसलिए जरूरी है कि आज के हिन्दुस्तान में धर्म और जाति काफी हद तक राजनीति के व्याकरण को निर्धारित करते हैं । हमारे देश में ज्यादातर शादियां जाति और परिवार के उन्हीं मानकों के आधार पर होती हैं जो मनु ने निश्चित किये थे ।

परिवार के भीतर पुरुष स्त्री संबंध कैसे हों, कौन बड़ा है, किसके कब्जे में संपत्ति हो , किसे समय समय पर पीटना चाहिए - इन सारे मुद्दों पर मनु निर्देश देते हैं। ये निर्देश आज भी हमारे समाज में पैठ बनाये हुए हैं । महिलाओं को ले कर मनु के निर्देश चर्चा के विषय रहे हैं ।

कुछ विद्वान यह बताते हैं कि मनु ने स्त्रियों को काफी ऊँचा स्थान दिया था । मनु का एक प्रसिद्ध श्लोक है जिसमे कहा गया है कि जहाँ नारियों की पूजा होती हैं वहां देवता वास करते ।

लेकिन अगर हम इस पुस्तक में नारियों के बारे में लिखे सभी श्लोकों का अध्ययन करेंगे तो पता चलेगा कि मनु स्त्रियों को हेय भाव से देखते थे । उदाहरण के लिए मनु का प्रसिद्ध श्लोक कहता है

"समय - कुसमय मे, इस लोक में या परलोक में, जिस व्यक्ति ने रीति रिवाज के साथ शादी की है वह हमेशा अच्छा होता है। पति में अगर कोई भी अच्छाई ना हो, वह भले ही व्यभिचारी हो , वह बिलकुल नालायक ही क्यों न हो, अच्छी स्त्री को पति को एक देवता समझ कर पूजना चाहिए।"

एक अन्य श्लोक में मनु कहते हैं

"व्यभिचारी वृत्ति, अस्थिरता , संग दिली स्त्रियों के अंदर कूट कूट कर भरी होती है। उनपर कड़ी नजर रखने पर भी वे पति के खिलाफ हो जाती हैं ।"

शायद यही कारण है कि एक प्रसिद्ध श्लोक में वे कहते हैं "नारी को बचपन में पिता की निगरानी , शादी के बाद पति की निगरानी में और पति के मर जाने पर पुत्र की निगरानी में रखा जाना चाहिए । किसी भी हालत में नारी को स्वतंत्र नहीं होने देना चाहिए।" महिलाओं को स्वतंत्र रूप से कोई भी धार्मिक कार्य करने का अधिकार नहीं था। वेदों से तो उन्हें दूर ही रखा जाता था। जरूरत पड़ने पर उनकी पिटाई का भी प्रावधान है। स्त्रियों के लिए ऐसे कानून बनाने के पीछे एक पितृसत्तात्मक जाति व्यवस्था की अवधारणाएं काम कर रही थीं ।

जाति व्यवस्था इस मान्यता पर आधारित थी कि संतति पिता की आध्यात्मिक और सांसारिक उत्तराधिकारी होती है। संतति का पिता निश्चित करने का सबसे कारगर उपाय था महिलाओं के ऊपर कड़ी निगरानी। शादी ब्याह के ऊपर उनका कोई अख्तियार नहीं।

शादी एक ही जाति के दो परिवारों के पुरुषों द्वारा ही निश्चित की जा सकती है। अब यदि मंदिरों में मनु निर्मित आदर्श समाज को फिर से लाने की बात की जा रही है तो आप समझ सकते हैं वह कैसा समाज होगा। निश्चित रूप से उसमे निम्न जातियों और महिलाओं के लिए कोई जगह नहीं।

(जामिया मिलिया में इतिहास के प्रोफेसर)